



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२८ नवंबर २०२३	२७-१०-२३	३	२-५

## पर्यावरण संरक्षण से स्वस्थ समाज का निर्माण हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बैंकिंग साइंस में आयोजित कांफ्रेंस में उपस्थित लोग। • जगरण



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बैंकिंग साइंस में आयोजित नेशनल कांफ्रेंस में संबोधित करते पुरुषपति प्रौदेशिक बीआर कांफ्रेंस में उपस्थित अधिकारी। जगरण

जगरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौदेशिक बीआर कांफ्रेंस ने कहा कि देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है।

खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर स्वस्थ समाज का कर सकते निर्माण हैं। वह विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-

**जलवायु परिवर्तन चिता का विषय : सुखदेव सिंह :** अध्यक्ष डा. सुखदेव सिंह ने कहा कि दर्तमान में भारत में खालियां से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व ग्रीनोगिकी की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।

आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में संबोधित कर रहे थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डा. नवीन कुमार

### सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया

डा. नवीन कुमार जैन ने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना-आईडीपी प्रोजेक्ट को अहम बताया। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत शिक्षक और विद्यार्थी लघु कोर्स और प्रशिक्षण लेने के लिए विदेशी के उच्च स्तर के शिक्षण संस्थानों में जाने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के द्वारा जो सिफारिशें कुछ स्थीरताया निकलकर आएंगी, वह कृषक समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष डा. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। मुख्यालियि श्री. बीआर कम्प्लॉक ने कहा कि

जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा। इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आधी, तूफान, सूखा इत्यादि शामिल हैं।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभृत उमाता	२७-१०-२३	२	१-५

## जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीति अपनानी होगी

एचएयू में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि बोले वीसी प्रो. कांबोज

मई सिटी रिपोर्टर

हिसार। देश का एक बड़ा हिस्सा गांवों में बसता है और कृषि पर निर्भर है। जिसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीति अपनाने की जरूरत है।

यह कहन है कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कुलपति प्रो. बोआर कांबोज का वे विद्यार्थी को विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी) आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

प्रो. कांबोज ने कहा कि जलवायु परिवर्तन अब स्लोबल वार्षिक तक संभित नहीं रहा। इसके बीसम में आने वाले



एचएयू में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दैरान पुस्तक का विमोचन करते अतिथियां। ज्ञा. संघर्ष

अप्रत्याशित बदलाव जैसे ओमी, तूफान, मुख्य, बाढ़ शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डाल रहा है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों को अपनाना होगा। बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किसीमें, मिट्टी की नदी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किसीमें, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

मुख्य वक्ता उत्तर-परिचयी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि

युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने की जरूरत : डॉ. नवीन विशिष्ट अतिथि एनएचईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक हॉ. नवीन कमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च स्तरीय शिक्षा को मजबूत बनाने, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने की बात कही। समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया। इस दैरान मुख्य अतिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया गया। इस प्रीक पर मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. नीरज कुमार, डॉ. जयेश काठपालिया, डॉ. रश्मि लाली मौजूद रहे।

वर्तमान में भारत में खाद्यानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियाँ हैं। प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों के लिए कटदम उठाने होंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पादक पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एस. भौम	२७-१०-२३	१०	३-६

जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वामिंग तक सीमित नहीं रहा : वीसी  
किसानों की आजीविका में सुधार कर हम  
स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण

हरियाणा कृषि  
विश्वविद्यालय में दो  
दिक्षीय राष्ट्रीय  
सम्मेलन यारू

ਫਾਰੀਨਾ ਜਿ ਕਥਾ » ਹਿਲਾਈ

देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संवेद गतिविधियों पर निर्भार है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, यथोचरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। यह बात हरियाणा कृषि विज्ञानालय के कुलपति प्रो. बीआर कामोज ने कही। वे विज्ञानियालय के भौतिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं समाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर अध्योजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बताए मुख्यालियत प्रतिभागियों को संवेदित कर रहे थे। इस दैरेन विशिष्ट अतिथि के रूप में



हिसार। पुस्तक का विमोचन करते हुए कल्पनि प्रो. बीआर काल्पोज व अन्य।

फोटो : हरियाली

एनएसचैपी-आईटीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएस) के अध्यक्ष डॉ. मुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।

मुख्यातिरि प्रो. बीआर कम्पोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब लग्जोवल वार्षिक तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आधी, टूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृप्त उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तपामान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधकरण, मौसम का पूछार्नाम, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

जलवायु परिवर्तन चिंता  
का विषय : डॉ. सिंह

मुख्य वक्ता एनडब्ल्यूआईएसए के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यानों से

**पुस्तक का किया विमोचन**

इस के विद्युतीय सम्बोधन के दौरान जो विषयाशील कृति स्वीकृतिया विकासकर अभिनीत, वह कृषक समाज के उद्यम ने महत्वपूर्ण गुणिता लिखने का एक काम कर गया। समाजशास्त्र विज्ञान की विभागाध्यक्ष डॉ. विनेश कुमारी ने वो विद्युतीय कामविद्यालय की स्पर्शस्था से अवश्यकता प्राप्त की। इस दौरान मुख्यालयी कृति उल्लेखन से संबोधित पुस्तक का विमोचन किया गया। गौतम विज्ञान पथ मालविद्यिलय के अधिकारा डॉ. वीरेज कुमार ने सभी का श्वाजन किया, जाहांगीर डॉ. जेतेश काठपालियन ने ध्यायादाद प्रसाद संपरित किया। इन कामविद्यालय में नव का संवेदन डॉ. रविम तथाई ने किया।

जुड़ी हुई योजनाओं के साथने दो मुख्य चुनौतियाँ हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा बढ़ावाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्हींने बताया कि जलवाय परियन्त्र किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक खिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मध्य पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पर्क पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक मासिक	२७-१०-२३	२	५-८

## भारकर खासा • हृषि में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का वीसी ने किया शुभारंभ खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण से स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. काम्बोज

भारत न्यूज़ | हिसार

देश मांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निभर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीक्विता में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुखा सुनिश्चित करना आवश्यक है। यह विचार एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने आईटीपी प्रोजेक्ट के तहत राष्ट्रीय सम्मेलन में बताए मुख्यातिथि के रूप में व्यक्त किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचईपी-आईटीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन रहे। मुख्य वक्ता के रूप में उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय सम्मेलन (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष



दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन करते हुए।

डॉ. सुखदेव सिंह ने शिरकत की। आवश्यकता है। उन्होंने मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि जलवायु परिवर्तन अब तक सीमित नहीं रहा। असमय तापमान का बढ़ना क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल किया जाए ताकि जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों व उनसे पैदा हो रही चुनौतियों से निपटा जा सके।

जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किसी भी की मर्मों का सरक्षण, यानी की उपलब्धता, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की

योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरी युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना। उन्होंने बताया जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।

विशिष्ट अतिथि एनएएचईपी आईटीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी) आईटीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। मुख्यातिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. रश्मि त्यारी ने किया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जजीत सभाचार	२७-१०-२३	५	१-५

## किसानों की आजीविका में सुधार, खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वतंत्र समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. काम्बोज

हिसार, 26 अक्टूबर (विरेन्द्र वर्मा): देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा लिम्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी के सम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना औं खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौथरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा गांवीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचीपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामग्रिक-आर्थिक उत्थान क्षियत पर आधोरित गांवीय सम्मेलन में बतौर मुख्यसत्रिय प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दीर्घ विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचीपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के गांवीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने



दो दिवसीय गांवीय सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन करते हुए प्रो. काम्बोज व अन्य।

जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय संघ समाजशास्त्रीय संघ (एनएएचीपीएसए) के अध्यक्ष डॉ. मुख्यदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके गौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तुफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, जिन्हीं

योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम लगात में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा मुख्यों को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। विशिष्ट अतिथि एनएएचीपी-आईडीपी के गांवीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने गांवीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचीपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च सारीय शिक्षा को मजबूत बनाने, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने युवाओं को खुद का व्यवसाय सुरू करने के लिए इस योजना को अहम बताया। इस दो दिवसीय गांवीय सम्मेलन के दौरान जौ सिकारियों कुछ स्वीकृतियां निकलकर आएगी, वह कृषक समाज के अंदर में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेंगे। समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार प्रत्र का नाम  
प्रजाकृति सरो

दिनांक  
२७-१०-२३

पृष्ठ संख्या  
५

कॉलम  
१-६

# जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीति अपनाने का आह्वान

हक्कि के राष्ट्रीय सम्मेलन में की जाएगी कई कृषि क्षेत्र को लेकर सिफारिशें, जलवायु परिवर्तन से निपटना है तो करना होगा नवीनतम तकनीक व इसोलाल : प्रो.काम्बोज

हिसार, 26 अक्टूबर (गढ़ी) : जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वर्षभैंग तक समित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव ऐसे आधी, तृष्णन, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है।

इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किये, पिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किये, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाक फसल उत्पादन प्रबंधन के अपनाने की आवश्यकता है।

उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मत पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे। उन्होंने कहा कि अगर हम आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ छोड़ना चाहते हैं तो हमें पर्यावरण संरक्षण जैसी मुहिम को अपनाना होगा।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. नी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च विद्या परियोजना (एन.ए.एच.ई.पी.) - आई.टी.पी. प्राइवेट के तहत कृषक



## २ मुख्य चुनौतियों से निपटना होगा : डा. सुखदेव

मुख्य चुनौता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि दर्शनाम में भारत में खाद्यानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने २ मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है।

उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मत पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे। उन्होंने कहा कि अगर हम आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ छोड़ना चाहते हैं तो हमें पर्यावरण संरक्षण जैसी मुहिम को अपनाना होगा।

समाज के सतत विकास एवं प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बड़ी मुख्यालीय प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे।

इस दोस्रे विषय प्रतिभागियों के रूप में एन.ए.एच.ई.पी.-आई.टी.पी.

निकलकर आएगी, वह कृषक समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेंगे। समाजशास्त्र विभाग की तीर एवं उपर्याक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने २ दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दोस्रे दिनों की सिफारिशें व कुछ मौकोंतियां अवगत कराया। इस कार्यशाला में मत

## जलांत विषयों पर चर्चा कर हल निकाला जाएगा : डा.नवीन

विशिष्ट अधिक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च विद्या परियोजना प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च स्तरीय विद्या को मजबूत बनाने, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

उन्होंने बताया कि आज के सम्मेलन का विषय बहुत महत्वपूर्ण है, जिसमें समाज से जुड़े जलांत विषयों पर चर्चा कर हल निकाला जाएगा। सामाजिक समस्याएं जैसे पर्यावरण परिवर्तन, जाति संरक्षा, खाद्य भंडारण, सामाजिक जगरूकता जैसे विषयों का निवारण करने के लिए बाहर के विभिन्न विद्यालयों से संस्थानों के साथ हमें एकजुट होकर काम करना होगा।

का संचालन हो। रसिय ल्यागी ने किया। रही चुनौतियों से निपटा जा सके। इसमें समाजशास्त्र क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक व कृषि वैज्ञानिक अथवा भूमिका अदा करने व केवल पांचालीसी प्लानर, बाल्क कृषकों व आप जनना को कृषि क्षेत्र से जुड़े नवाचारों, प्रौद्योगिकियों से अवगत करवा सकते हैं।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम  
~~दैनिक रजिस्टर~~

दिनांक  
२७-१०-२३

पृष्ठ संख्या  
५

कॉलम  
५-५

## हक्किय में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

### जलवायु परिवर्तन ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं : काम्बोज

हिसार, 26 अक्टूबर (छप)

जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी को उपलब्धता, रोग-गहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कही। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	27.10.2023	--	--

## किसानों की आजीविका में सुधार, खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार। देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा

**हक्कि में दो दिवसीय  
राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू**

आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को



सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना

संबोधित कर रहे थे। इस दैरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के

तौर पर उपस्थित रहे।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल चार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके भौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे ऑंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल

हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, भिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, भौसम का पूर्वानुभान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

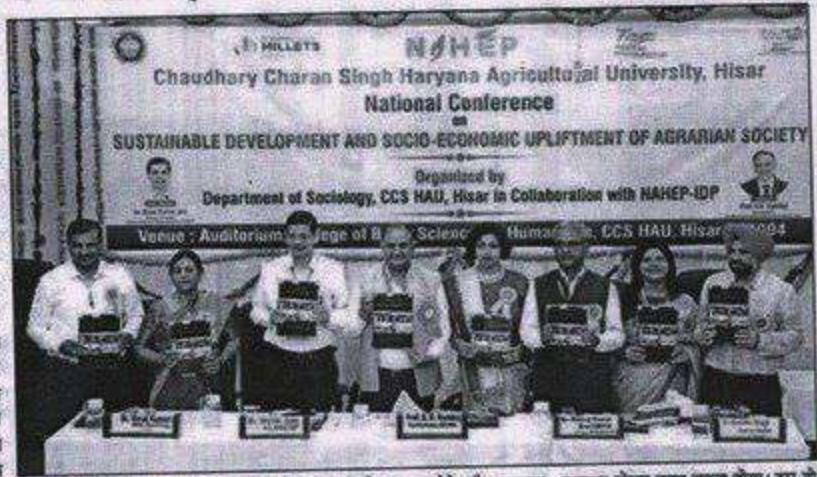
समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	26.10.2023	--	--

बौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

किसानों की आजीविका में सुधार, खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा नूज  
हिस्सर, 26 अक्टूबर। देश गांधी मे  
वताना है और इस सामाजिक का एक बड़ा  
हिस्सा कृषि व संचय गतिविधियों पर  
निर्भए है। हिस्साने की विचित्र में सुधार  
के लिए उनकी आजीविका में सुधार,  
गांधीजी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को  
बढ़ावा देना और साथ सूक्ष्म सुनिवास  
करना आवश्यक है। मैं विचार और धरी  
वरपर सिंह हरियाणा कृषि विकासालय के  
कृत्यालयी प्रौद्योगिकी और अन्तर्राज्यीक  
विद्यालय एवं मानविकी महाविद्यालय के  
सामाजिक विभाग द्वारा गांधी कृषि  
उच्च विद्या प्रारंभिक बना (एनएचपी)-  
आजीवी प्रौद्योगिकी के लकड़ कृषि समय  
के समान विकास एवं सामाजिक-  
आर्थिक उत्तराधिकार पर आधारित  
राष्ट्रीय सम्मेलन में बौद्धीय सुखवालिपि  
प्रतिभावितों को संबोधित कर रहे थे। इस  
दीर्घ विशिष्ट अतिथि के स्वयं में  
एनएचपी-आजीवी प्रौद्योगिकी के  
राष्ट्रीय समवयक्त द्वा, नवीन कृष्ण बैन  
और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाज  
सम्बोध संघ (एन डब्ल्यू और एसए)  
के अध्यक्ष द्वा, सुखवालिपि द्वारा  
के हीरे पर उत्पन्नित हैं। सुखवालिपि प्रौ.  
शी. और जामोदोरी ने अपने संस्थान में  
कहा कि जयपुर परिवर्तन अब एलोचना  
विषयित एक संस्कृती होती है। इसके  
पीछे में अपने लाल अप्रसरित वदलाय  
जैसे आधी, उपरान, सुखा, यह इस्पाति  
सम्बिल है। असमय तथापन का यहना  
कृषि उत्पादन पर प्रभाव छाता है।  
इसलिए अत्याधिक पर्यावरण की चुनौतीय

वे निष्ठने के लिए अनुकूल गणनीयता  
जैसे कि वहाँ तापमान व सूखे के  
अनुकूल फलस फिर्से, फिर्से की नमी  
का मालाल, पानी की उपलब्धता, रोग-  
रुद्धि फलस फिर्से, फलस हितायि  
काल, भौतिक का पूर्णामान, टिकाऊ  
फलस उत्पादन प्रक्रियाओं को अपनाने की  
अवधिकालीनता है। उन्होंने कहा कि हम एक  
ऐसा भवियत बनाए जहाँ हम प्रकृति के  
साथ सह-अभियान हों, जहाँ कोई भी  
परेंज न होते और जहाँ समृद्धि को कोई  
संकट न हो। हमें अपने पर्यावरण के प्रति  
चेतना और कलाना पैदा करने चाहिए और  
स्थायी विकास के लिए नवकारणों का  
निपायन करना चाहिए। प्रकृतिविधि ने  
उत्पादन समाजसत्त्व व कृषि खेत से  
जुड़े विशेषज्ञों ने अझान किया कि कृषि  
खेत में नवकारण तकनीक का इस्तेमाल  
किया जाए ताकि उत्पादन परिवर्तन से हो  
ते दुष्प्रभावों व उत्पादन पैदा हो जाए  
चुनौतियों से निटा जा सके। इसके  
समाजसत्त्व खेत से जुड़े वैज्ञानिक  
कृषि वैज्ञानिक अझन भूमिका अदा कर  
के बल प्राप्तियों परामर्श दिलाकर  
उपर जनना की कृषि खेत से जुड़े  
नवकारणों, प्रौद्योगिकियों से अवगत करना  
सकता है। पुरुष वकाल उत्प-परिवार  
भालौलीय समाजसत्त्वीय संघ (एन डब्ल्यू  
सीआई एसए) के अध्यक्ष डॉ. मुख्यदेव  
सिंह ने कहा कि वर्षभान में भारत  
जनजातीयों से जुड़ी हुई जोकामों के साथ  
दो मुख्य चुनौतियाँ हैं। पहली कम जाता  
में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरी  
मुख्यतः को कृषि व्यवसाय की तर



जाकरित करता है। उन्होंने बताया कि जलसाधारण परिवहन किसीने व वैज्ञानिकों के लिए एक विद्या का विषय बन नहीं है। इसके लिये कृप्ति बोर्ड से तुड़े शोध संस्थानों को एक मंत्र पर अवकाश देता है। वैज्ञानिकों की मदद से किसीने इसके लिए एक कार्य उत्तराधिकारी भी नहीं होता है। उन्होंने कहा कि अगर हम अपने वासियों पांचदोषों के लिये कुछ लोगों नामांकन करते हैं तो हमें प्रबल योग्यता जैसी प्रशिक्षण को अपेक्षा होता है। विशिष्ट अधिकारीएन पर प्रशंसनी-आद्वीटी के गोपनीय अध्यक्ष डॉ. नवीन कुमार जैन ने यात्री कृप्ति ने उच्च लिपि परिवहन (एन ए ए प्रशंसनी)-आद्वीटी प्रोजेक्ट के बारे में भवित्व, सामाजिक व्यापकता और विषयों का विवाचण करने के लिए बात कि वह प्रोजेक्ट उच्च शान्ति लिपि को के विविध विधियों से संबंधित होकर काम करना होगा। इस दिवसीय रातीय सम्मेलन के द्वारा यह विशिष्ट आद्वीटी के लिए उत्तराधिकारी आएगी, वह वृद्ध समाज के उत्तम महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेगी। समाजवादीय विभाग की विधायकधर्म डॉ. विनोद कुमारी ने दी दिवसीय सम्मेलन की संपर्कता में अवाहन करता है। इस दौरान मुख्यालियदार प्रथम सम्मेलन से संबंधित काम विधियों का काम किया गया। प्रतिविधि विज्ञान एवं भावनाविकी भवित्ववालान के अधिकारी डॉ. नवीन कुमार ने सभी का सम्मान विद्या, व्यापक डॉ. अश्व कर्मालिया ने भवित्ववाद प्रताल पारित किया। इस कार्यसालान में वैष्ण का संवादालम डॉ. रमेश साहनी ने किया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
विराग टाइम्स	26.10.2023	--	--

चिंग टाइप

अक्टूबर 2023

2

किसानों की आजीविका में सधार, खाड़ि सरसा व पर्यावरण संरक्षण का हम यथ समाज का सकते हैं निर्णयः प्रे. ची.आ. काल्पन

हिंसा ( चिराग दाइम्ब )  
हिंसा। देश यात्री में व्यवस्था है  
और इस व्यवस्था का एक बड़ा  
हिंसा क्षण व सबका प्रतीक्षितया  
पर लिखा है। जिसको को प्रियों  
में सुनकर के लिए उनको  
आजीविका में सुनकर भाँड़ी कम  
करना, प्रत्यक्षम संवेदन को  
खोना है और सभी सुनकर  
सुनीचकर करना आवश्यक है। ये  
विचार धौधरी सरकर निः  
हिंसात्मक क्षण विविधात्मक के  
द्वारा दी गई अति कठोरता व  
ज़रूरि किए। ये विविधात्मक के  
सांखिक विचार एवं गणकार्यी  
विविधात्मक के समाज व सामूहिक  
विचार हुए रूपों को उनके  
विचार धौधरी का  
(प्रबन्धकार्यालय)



संक्षिप्त  
विषय

एवं अपावृणु-  
त्यु याननदक  
जेति न गतिम्  
हो परिदीपता  
। वार्ष वार्षी  
मे विविधपूर्वक  
स्त्रीय वासि कि  
व विशेष विकल  
प वस्त्राणि देह  
मे महापूर्णपू  
र्ण है। उक्तीय  
वार्ष वार्षी  
पूर्वक स्त्रीय  
के विविध विकल  
पु और और  
विविध विकल  
पूर्वक स्त्रीयों  
में प्रधान होती है  
कि उक्त व



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	26.10.2023	--	--

## किसानों की आजीविका में सुधार व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार देश गंगों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निभार है किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। ये विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी मशाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित



दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन से संबंधित पुस्तक ला रिगोव्ह रखते हुए।

राष्ट्रीय सम्मेलन में बतार मुख्यालिय (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपर्युक्त रूप में इस दैर्घ्य विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। डॉ. नवीन कुमार एवं उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान

में भारत में खाद्यान्नों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरी युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवाया परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।

विशिष्ट अतिथि एनएचईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी दी।